जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 30 संख्याः 28 प्रभात उदयपुर, मंगलवार 29 नवम्बर, 2022 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

एक नए शोध के अनुसार बीवर (ऊदबिलाव) हमारे पानी की गुणवत्ता व ईकोसिस्टम हैल्थ को बचा सकते हैं। नेचर कम्युनिकेशन्स जर्नल में छपे इस शोध में यह निष्कर्ष दिया गया है, जिसमें कोलोराडो के रॉकी माउन्टेन्स के शहर रॉकी बट के बाहर एक बीवर डैम पर फोकस किया गया था। शोधकर्ता, स्टैनफर्ड युनिवर्सिटी में वॉटर एण्ड सॉइल साईन्स के विद्यार्थी क्रिस्टियान डूवी ने यह शोध कोलोराडो नदी की सहायक नदी ईस्ट रिवर के साथ बहने वाली धारा पर किया है, जो स्थान परिवर्तन करती है। डूवी ने उम्मीद जताई कि, यह शोध वैस्टर्न वॉटर शैड्स (हाई ग्राउण्ड का ऐसा क्षेत्र जो अलग-अलग नदियों के पानी को विभाजित करता है) पर मंडरा रहे संभावित खतरों पर ज्यादा प्रकाश डाल सकता है। डूवी शुरु में बीवर पर शोध नहीं करने वाले थे, लेकिन फिर धीरे-धीरे अति मेहनती बीवर्स उनके रिसर्च क्षेत्र पर छा गए। वर्ष 2018 में गर्मी के मौसम में उन्होंने देखा कि, नदी की मुख्य धारा पर एक बांध बन गया है, जिसके कारण छोटे तालाब में प्रवाह धीमा हो गया है। डूवी ने कहा, ''हम एकदम सही समय पर सही स्थान पर थे, यह देखने के लिए कि बीवर के बनाए डैम से क्या परिवर्तन हुए थे।'' बीवर्स ने दो माह तक बांध को बनाए रखा, जब तक कि पानी से मिट्टी और अन्य शाखाएं बहकर निकल नहीं गईं। डूवी ने धारा के प्रवाह व रासायनिक संरचना का सावधानी से अध्ययन करके पाया कि, बांध ने आसपास की मिट्टी को जलमग्न कर दिया, जिससे माइक्रोब्स ने अतिरिक्त नाइट्रोजन को हानिरहित गैस में बदल दिया। बारिश और बर्फ पिघलने का भी यही असर होता है, पर बीवर्स के बनाए बांधों से ज्यादा लाभ होता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि बांध की वजह से 44 प्रतिशत ज्यादा नाइट्रोजन बाहर निकली।

'क्या आप गहलोत द्वारा पायलट को गद्दार कहने से सहमत हैं'

राहुल ने जवाब में कहा, ''मैं इसमें नहीं पड़ना चाहता किसने क्या कहा, हमारे लिये दोनों बहुमूल्य हैं''

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

इन्दौर (मध्यप्रदेश), 28 नवम्बर। राहुल गाँधी ने कहा, अशोक गहलोत व सचिन पायलट दोनों ही पार्टी के लिए ''बहुमूल्य'' हैं, तथा वो इस बात में नहीं पड़ना चाहते कि, किसने किससे क्या कहा। उन्होंने आगे कहा, ''लेकिन मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि, किसी भी कीमत पर भारत जोड़ो यात्रा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।''

भारत जोड़ो यात्रा के दौरान अपनी सातवीं प्रेस कॉन्फ्रैंस को संबोधित करते समय राहुल गाँधी ने राजस्थान पॉलिटिक्स के बारे में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में यह बात कही। उनसे पूछा गया था, ''क्या आप गहलोत द्वारा सचिन पायलट को गद्दार कहने से सहमत हैं।''

इस पर उन्होंने कहा, मैं इस बात में नहीं पड़ना चाहता कि किसने क्या कहा, लेकिन दोनों ही ''बहुमूल्य'' हैं।

जवाब से यह स्पष्ट है कि, राहुल गाँधी तथा पार्टी नेतृत्व की प्राथमिकता केवल यह है कि, राजस्थान में यात्रा बिना किसी अप्रिय घटना के सम्पन्न हो जाए। क्योंकि यदि परस्पर विरोधी गुट सड़क पर उतर आए तो यात्रा में समस्या पैदा हो सकती है। इसके अलावा, राहुल को राजस्थान की समस्या को सुलझाने में कतई रुचि नहीं है, जो कि, पार्टी के नेतृत्व द्वारा कोई निर्णय नहीं लेने के कारण अति कटु और विकट हो गई है।

- **जवाब से यह स्पष्ट है, राहुल की प्राथमिकता है कि, भारत जोड़ो यात्रा, बिना किसी अप्रिय घटना के राजस्थान में सम्पन्न हो जाये और इसीलिये वेणुगोपाल को 29 नवम्बर को जयपुर भेजा जा रहा है।**
- **प्रेस कॉन्फ्रैंस में राहुल का मुख्य प्रयास बार-बार यह समझाने में लगा कि, कैसे उनकी यात्रा राजनीति के बारे में नहीं बल्कि इसलिये है कि, कैसे भाजपा द्वारा जनित घृणा व भय के वातावरण में भी देश को एकजुट रखा जाये।**
- **राहुल ने यह भी कहा कि, भाजपा अपनी मनोस्थिति के अनुसार देश को चलाना चाहती है, जबकि देश जनता की इच्छा के अनुसार चलना चाहिये। पर, राहुल यह भूल गये, जनता ने भाजपा को चुन कर सरकार में भेजा है, अतः भाजपा उसी तरह सरकार चलायेगी, जैसा वह सही मानती है।**
- **राहुल ने यह भी कहा, वो लोग, जैसे ज्योतिरादित्य सिंधिया, यदि रिश्वत लेकर पार्टी छोड़ कर गये हैं, तो उनका पुनः पार्टी में वापस आना मुश्किल है।**

के.सी. वेणुगोपाल को जयपुर भेजा गया है, भारत जोड़ो यात्रा का सहज व सुचारु सफर सुनिश्चित करने के लिए। इसके अलावा दोनों पक्षों से कहा गया है कि, वो अपने समर्थकों को नियंत्रण में रखें तथा अपनी निष्ठा का सार्वजनिक प्रदर्शन ना करें।

प्रेस कॉन्फ्रैंस में राहुल गाँधी का मुख्य प्रयास बार-बार यह समझने में लगा कि, यह यात्रा राजनीति के बारे में नहीं और वो इस यात्रा से किसी तरह के राजनीतिक लाभ की आशा नहीं कर रहे है, बल्कि इसके द्वारा वो भाजपा द्वारा पैदा किए गए भय व नफरत के विरुद्ध देश को एकजुट करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा, भाजपा व आस.एस.एस. अपनी मनोस्थिति के अनुसार देश को चला रहे हैं, जबकि देश को जनता की इच्छा के अनुसार चलना चाहिए।

तथापि, वो यह भूल गए कि, जनता भाजपा को सत्ता में लाई तथा भाजपा जो सही समझती है उसके अनुसार देश को चलाएगी।

कांग्रेस के लिए अब इस स्थिति से निपटना बहुत मुश्किल होता जा रहा है,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

राष्ट्रपति शी की लताड़ के बाद कैनेडा ने विदेश नीति का रूख बदला

बाली में चीन के राष्ट्रपति ने कैनेडा के प्र.मंत्री पर आपसी बातचीत को सार्वजनिक करने का आरोप लगाया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 नवम्बर। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की कैनेडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के साथ हुई विकट मीटिंग के बाद कैनेडा ने अपनी विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन करना शुरु कर दिया है।

कैनेडा के विदेशी संबंध अब तक अमेरिका और यूरोपीय देशों तक ही केन्द्रित थे, लेकिन बदली वैश्विक व्यवस्था में वह अपने सभी हितों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से चीन के अलावा एशिया के शेष देशों के साथ अपने संबंध विकसित करना चाहता है। बाली में आयोजित जी-20 देशों के बाली शिखर सम्मलेन के दौरान चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ हुई तनावपूर्ण बातचीत के बाद कैनेडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपनी विदेश नीति को चीन से अलग रखने पर जोर दे रहे हैं।

- **कैनेडा के प्रधानमंत्री ने हिम्मत दिखाते हुए कहा, प्रजातंत्र व डिक्टेटरशिप में फर्क है तथा प्रजातंत्र में गोपनीयता पर उतना प्रीमियम नहीं है, जितना डिक्टेटरशिप में।**
- **अब तक कैनेडा की दृष्टि में, इण्डो- पैसिफिक क्षेत्र में व्यापारिक संबंधों की दृष्टि से चीन सबसे महत्वपूर्ण था। जितना चीन-कैनेडा का व्यापार है उसका आधा भी इस क्षेत्र के अन्य देशों से नहीं था।**
- **पर, अब लताड़ के बाद कैनेडा ने इस क्षेत्र के अन्य देशों, भारत, जापान, दक्षिण कोरिया, के साथ व्यापार बढ़ाने के प्रयास तेज किये।**
- **साथ ही चीन की वित्तीय मदद से, कई देशों, जैसे श्रीलंका में भारी भरकम प्रोजैक्ट लगते गये, पर, शुरू से घाटे के सौदे साबित हुए तथा ये देश कर्ज के दलदल में फंस गये। कैनेडा भी इससे सबक लेकर चीन से दूरी बनाने की नीति पर चलना चाह रहा है।**

कैनेडा अपनी सैन्य और नौसैनिक पैट्रोलिंग को पैसिफिक कमाण्ड में आगे बढ़ा रहा है और भारत, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे ऐसे देशों के साथ विज्ञान और अनुसंधान को लेकर संबंध स्थापित कर रहा है जो अब तक उसकी दोस्ती से अछूते रहे हैं। वह चीन के अलावा एशिया के अन्य देशों के साथ आर्थिक मजबूत व्यापारिक संबंध मजबूत कर रहा है।

विदेश नीति को लेकर रविवार को जारी एक दस्तावेज में कैनेडा के विदेश मंत्री ने देश के पूर्व के अति निर्भर नीतिगत रूख के बारे में प्रैस को ब्रीफ किया। चीन के राष्ट्रपति के साथ हुई बातचीत ने कैनेडा के चीन के साथ रहे अति-निर्भर आर्थिक संबंधों की कमजोरियों को उजागर कर दिया।

अपने और ट्रूडो के साथ हुई बातचीत को एक न्यूज़ मीडिया को सार्वजनिक करने को लेकर शी ने ट्रूडो को फटकार लगाई थी। ट्रूडो ने इसके जवाब में कहा था कि लोकतंत्र के रूप में उनका देश चीन की गोपनीयता बरतने की आदत के विपरीत एक अलग सिद्धांत

(शेष पृष्ठ 5 पर)

समलैंगिक को दिल्ली हाई कोर्ट का जज बनाने से केन्द्र का इंकार

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 नवम्बर। केन्द्र सरकार ने एडवोकेट सौरभ किरपाल को दिल्ली हाईकोर्ट के जज के रुप में पदोन्नत करने से इन्कार कर दिया है। किरपाल ने गत 17 नवम्बर को मीडिया को बताया था कि उनके ''सैक्सुअल ओरिएन्टेशन'' के कारण उनके प्रमोशन में वर्ष 2017 से ही विलम्ब किया जाता रहा है। इण्डिया अहेड की एक रिपोर्ट के

- **इंडिया अहैड की रिपोर्ट के अनुसार एडवोकेट सौरभ किरपाल का नाम पुनर्विचार के लिए कोलीजियम को भेजा गया है। किरपाल का कहना है कि 2017 से उनका प्रमोशन उनके ''गे'' होने की वजह से लटकाया जा रहा है।**

(शेष पृष्ठ 5 पर)

महाराष्ट्र के राज्यपाल कोश्यारी ने इस्तीफा देने की पेशकश की

कोश्यारी, आये दिन, अपनी टिप्पणियों से केन्द्रीय सरकार के लिये अटपटी स्थिति पैदा कर रहे हैं

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 नवम्बर। बताया जाता है कि महाराष्ट्र के राज्यपाल भगतसिंह कोश्यारी, जो छत्रपति शिवाजी महाराज के बारे में उनकी हाल ही टिप्पणियों को लेकर सभी तरफ से घिर गये हैं तथा केन्द्र सरकार भी उन्हें इन विवादों से बाहर निकालने की इच्छुक दिखाई नहीं दे रही है, ने अपने इस्तीफे की पेशकश कर दी है।

विवादों में बने रहने वाले कोश्यारी ने अभी हाल ही उस समय मराठी संवेदनाओं की नाज़ुक रग को दबा दिया, जब उन्होंने शिवाजी को ''पुराने ज़माने का नायक (आइकन) बताते हुये, उन्हें बाबा साहेब अम्बेडकर तथा नितिन गडकरी जैसे ''राज्य के आधुनिक आइकनों'' की श्रेणी में रख दिया। राज्यपाल की इस टिप्पणी से शिवाजी के वंशजों तथा शिव सेना (यू.बी.टी.) एवं एन.सी.पी. सहित विपक्षी दलों का

- **छत्रपति शिवाजी पर उनकी टिप्पणी के बाद केन्द्रीय सरकार ने भी राज्यपाल से दूरी बनाने का मन बनाया।**
- **अकेले पड़ने के कारण कोश्यारी ने इस्तीफा देने की पेशकश की है।**

क्रोध भड़क गया। भाजपा से जुड़े तीन नेताओं- उदयनराजे भौंसले, संभाजी राजे छत्रपति तथा शिवेन्द्र सिंह भौंस के-ने माँग कर डाली कि या तो केन्द्र राज्यपाल को वापस बुलाये या उनसे माफीनामा माँगे।

भाजपा के राज्यसभा सांसद भौंसले ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखकर, कोश्यारी को वापस बुलाये जाने की माँग की है। इस बीच, शिव सेना यू.बी.टी. तथा एन.सी.पी. राज्यपाल को हटाये जाने की माँग करते हुये, राज्यव्यापी विरोध-प्रदर्शन आयोजित कर रही हैं।

भाजपा नेताओं ने कोश्यारी से संबंधित इस विवाद से दूरी बना ली है। सत्तारूढ़ दल के कुछ वर्गों का मत है कि राज्यपाल अपनी बार-बार की गलतियों एवं अपराधों के कारण पार्टी के लिये एक बोझ (लाइबिलिटी) बन गये हैं। जुलाई में उन्होंने उस समय मराठी लोगों को चिढ़ा दिया था, जब उन्होंने एक समारोह में बोलते हुये कह दिया था कि ''अगर गुजराती और राजस्थानी मुम्बई छोड़ जायें, तो इस महानगर में पैसा ही नहीं रहेगा।'' मार्च में, उस समय उन्हें जबरदस्त आलोचना का सामना करना पड़ रहा था, जब उन्होंने ऐतिहासिक समाज सुधारकों सावित्री बाई एवं ज्योतिबा फूले के विवाह को लेकर

(शेष पृष्ठ 5 पर)

जबरन धर्म परिवर्तन की अनुमति नहीं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 नवम्बर। केन्द्र ने सर्वोच्च न्यायालय से कहा है कि धर्म की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार में लोगों का धर्मान्तरण करने का अधिकार

- **केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि, धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में लोगों का धर्मान्तरण कराना शामिल नहीं है। सरकार ने यह दलील सुप्रीम कोर्ट में तब दी जब वह फर्जी धर्मान्तरण के खिलाफ दायर याचिका पर विचार कर रहा था।**

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'एक अच्छे ''गॉल्फर'' की भांति राहुल आगे बढ़ रहे हैं, अपने व्यक्तिगत अठारहवें होल की तरफ'

''गॉल्फ में आपका कोई प्रतिद्वंदी नहीं, आप अपने ही खिलाफ खेल रहे हैं। अपना ही टारगेट तय करके, आप उसकी ओर बढ़ते हो। कोई फर्क नहीं पड़ता और कौन-कौन अपने टारगेट को प्राप्त कर लेता है''

-सुजीत चक्रवती-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 नवम्बर। युवा गांधी, मुझसे 11 साल छोटे, अकेले चल रहे हैं जैसे गॉल्फ का खेल होता है अकेले ही खेला जाता है। अचरज की बात है कि लाखों लोग उनके साथ चल रहे हैं।

गॉल्फ के खिलाड़ी दिगराज मारवाह ने मुझे एक बार बताया था कि, ''गॉल्फ ही एक मात्र ऐसा खेल है जिसमें आप खुद के खिलाफ खेलते हैं इसमें कोई प्रतिस्पर्धी नहीं होता है। आप ही अपने लिए लक्ष्य तय करते हैं और उसे हासिल करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन ज्यादा हासिल करता है कौन कम। जो आप कर सकते हैं, उतना हासिल कर सकते हैं कोई भी आपको रोक नहीं सकता है।''

गॉल्फ में कोई और मैदान तैयार करता है, इसमें कई अड़चने और बाधाएं होती हैं जो जानबूझ कर डाली जाती है, जैसे वॉटरहोल्स, सैंड बंकर्स, खाई आदि आदि आपको इन बाधाओं को पार करना पड़ता था। इसके अलावा हवा भी होती है जो कभी आपके पक्ष में होती है तो कभी विपरीत, फिर आपको हवा की दिशा और गति का हिसाब लगाकर शॉट मारना पड़ता है।

विशेषज्ञ हैरान हैं उन्हें कोई आईडिया नहीं है कि असल में कुछ राजनैतिक विश्लेषक अभी भी सोच रहे हैं कि इसके कुछ अलग मायने हैं। आखिरकार राजनीति में आखिरी खेल जीतने वाली पार्टी का होता है।

मैं शर्त लगा सकता हूँ कि राहुल की भारत का प्रधानमंत्री बनने की कोई योजना नहीं है। वो गॉल्फ के गेम में हैं। अपनी ही निजी इच्छाओं के खिलाफ खेल रहे हैं और स्ट्रीट पॉलिटिक्स से ऊपर उठ रहे हैं। एक और गांधी एम.के. (मोहन दास करमचंद) भी कभी भी प्रधानमंत्री नहीं बनना चाहते थे।

राहुल के लिए यह गोल्फ टर्फ अन्य लोगों ने गत 70 साल में बनाया है। कई मुश्किलें हैं। सबसे पहली तो उनके परनाना पं. जवाहर लाला नेहरू की गलतियां। दूसरे तानाशाही की विरासत जैसी उनकी स्वर्गीय दादी मां इंदिरा गांधी की, जिन्होंने बांग्लादेश को आजादी दिलाई और अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन द्वारा समर्थित पाकिस्तान को हराया। तीसरी उनके पिता की विरासत जिन्हें लिट्टे आतंकवादियों ने बम से उड़ा दिया था।

किसी भी अन्य खेल की तहत इसमें बहुत सा अनुशासन चाहिए, धैर्य, ध्यान और निश्चित रूप से शारीरिक क्षमता और ध्यान केन्द्रित करने की समक्षा की भी जरूरत है।

और सबसे बड़ी बाधा उनकी इटली में जन्मी भारतीय नागरिक मां है, जब मैं सिक्किम में काम कर रहा था तब किसी काम के तहत मैं उनसे मिलने गया था तो मैंने उनके कार्यालय में लिखा देखा था कि ''मुझे बहु नहीं बेटी बोलो''

इतनी सारी बाधाएं है और वे अभी भी अठारहवें होल की तरफ बढ़ रहे हैं। उन्हें क्या हासिल हुआ है, या कहे कि वे क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं?

आप देखिए गॉल्फ में कई तरह के स्कोर होते हैं जैसे बर्डी, ईगल या

- **वरिष्ठ पत्रकार सुजीत चक्रवर्ती अपने ''गॉल्फिंग सबकों'' को राहुल की भारत जोड़ो यात्रा में परिलक्षित देख रहे हैं।**
- **''गॉल्फ कोर्स'' कोई और सैट करता है, उसमें नाले, पानी के वॉटर-होल्स, गड्ढे कोई और बनता है, गॉल्फ कोर्स में कृत्रिम कठिनाईयाँ उत्पन्न करता है।**
- **राहुल के लिये राजनीति के गॉल्फ कोर्स को परपितामह नेहरू, दादी इंदिरा गांधी ने अपनी ''गल्तियों'' और ''उपलब्धियों'' से ''क्यूरेट'' किया (बनाया) अब इस गॉल्फ कोर्स पर राहुल को अपना खेल खेलना है।**

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अल्पसंख्यक छात्र को आतंकवादी कहना भारी पड़ा

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 नवम्बर। बैंगलोर में एक ऐसी घटना हुई जिसमें एक युवा छात्र को सिर्फ धर्म के आधार पर आतंकवादी बताकर उसके साथ एक तरह से अन्याय किया गया। शायद इस घटना पर किसी का ध्यान नहीं जाता, लेकिन अल्पसंख्यक समुदाय का यह छात्र गुस्से में आकर अपना पक्ष साबित करने पर अड़ा रहा और उसने प्रोफेसर

- **बैंगलोर मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नॉलजी ने आरोपी प्रोफेसर को निलम्बित कर दिया। तीन-चार दिन पुरानी इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।**

(शेष पृष्ठ 5 पर)